वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २५ जून - २०२५ प्रकाशन - ०६

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

जून २०२५

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

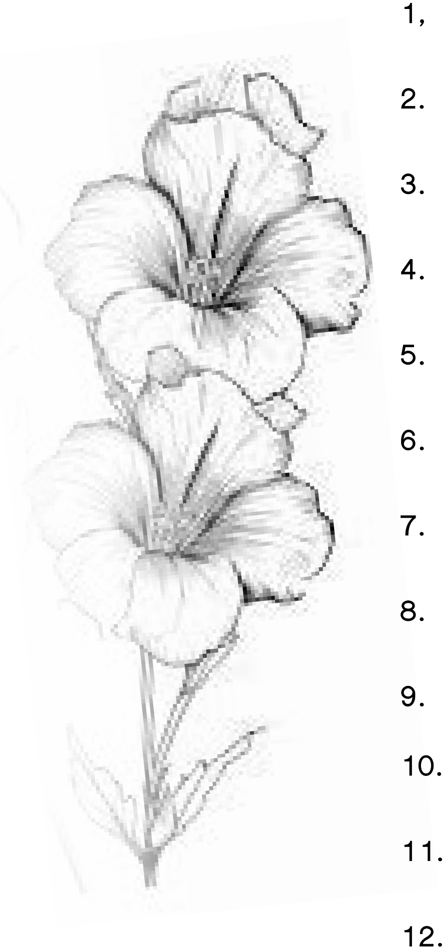

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	12
5.	गीता और मानवजीवन	17
6.	जीवन्मुक्त	21
7.	श्री कौशल्या चरित्र	24
8.	कथा	28
9.	आश्रम-मिशन समाचार	32
10.	आगामी कार्यक्रम	47
11.	इण्टरनेट समाचार	49
12.	लिन्क	50

जून 2025

आत्मबोध

श्लोक : ४७

सम्यक् विज्ञानवान् योगी
स्वात्मन्येवाखिलं जगत्।
एकं च सर्वमात्मानम्
ईक्षते ज्ञानचक्षुषा।।

सम्यक् अनुभवजन्य ज्ञान हो गया है वह योगी अपने में ही समस्त जगत् को तथा सब को अपने आत्मा की तरह ज्ञानचक्षु के द्वारा देखता है।

सन्देश

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

दिन और रात

यहां हम काल की दृष्टि से दिन और रात की बात नहीं कर रहे हैं, किन्तु भगवान द्वारा कहे गए उन शब्दों का उल्लेख कर रहे हैं, जब वे स्थितप्रज्ञ और दुनिया के एक साधारण व्यक्ति जो अपने आध्यात्मिक सत्य से अनभिज्ञ है, इन दोनों की धारणाओं के बीच विस्मयकारी अन्तर बता रहे हैं। उनके बीच का अन्तर रात और दिन की बीच के विरोधाभास से कम नहीं है। अद्वैत वेदान्त में प्रतिपादित आत्मज्ञानी की समझ एक साधारण व्यक्ति के लिए सचमुच अकल्पनीय हैं जो अभी भी स्वयं को एक जीव - व्यक्ति मानता है, ठीक वैसे ही कि जैसे एक स्वप्न देखनेवाले व्यक्ति के लिए जाग्रत अवस्था के अपने सत्य की कल्पना करना असम्भव है।

उससे पहले कि हम यह समझें कि स्थितप्रज्ञ वास्तव में कौन है? आइए! हम दुनिया के साधारण व्यक्ति की धारणाओं को देखें। हमारा रोजमर्रा का या तथाकथित व्यावहारिक जीवन द्वैत

में मौजूद है। हम स्वयं को व्यक्ति के रूप में देखते हैं – अपने आस-पास के सभी लोगों से भिन्न, हम अपने चारों और एक सुन्दर, अनन्त और विविध दुनिया देखते हैं, हम इस अत्यन्त व्यवस्थित और विस्मयकारी सृष्टि को देखते हैं और स्पष्ट रूप से एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सृष्टा ईश्वर में विश्वास करते हैं। हम कारण और कार्य की प्रक्रियाओं को देखते हैं और ब्रह्माण्ड में चीजें कैसे काम करती हैं, इसकी वैज्ञानिक रूप से समझ रखते हैं। मैं आपसे भिन्न हूं और आप दूसरों से। हर कोई अपने आपमें पृथक् और अद्वितीय है। दुनिया हमसे अलग और भगवान भी हमसे अलग हैं-जो कि स्वर्ग या कहीं बाहर विराजमान हैं। यही द्वैत का अर्थ है। हम अस्तित्व के इस दायरे को देखते हैं-जो साधक साध्य से भिन्न है और दृष्टा दृश्य से भिन्न। यह हमारे सभी धर्म, विज्ञान, राजनीति अर्थशास्त्र और प्रबन्धन कौशल के साथ इस दायरे में जीवन की सच्चाई है। जीवन एक चुनौति है और इसमें वास्तव में असंख्य समस्याएं है। यहां प्राथमिक चिन्ता का विषय 'अस्तित्व' है। सब कुछ इतना परिवर्तनशील और क्षणभंगुर है, और हमें इसी दायरे में जीना और जीवित रहना है। एक स्थितप्रज्ञ हमारी इन धारणाओं का साझा नहीं करता है। वे हमारे मध्य मानों एलियन्स-अन्य ग्रह

के प्राणी की तरह प्रतीत होते हैं और पूरी तरह से एक अलग ही दायरे में रहते हैं। उनके लिए कोई द्वैत नहीं है। कोई साधक और साध्य नहीं, कोई द्रष्टा–दृश्य नहीं, जीव–जगत या ईश्वर के बीच कोई मौलिक अन्तर नहीं है। उनके लिए यह सब एक ही सत्य की अभिव्यक्ति है जो एक, अद्वैत अनन्त है और वही सभी का आत्मा है। अभिव्यक्तियां वास्तविक नहीं है। वे स्वयं को एक अनन्त, कालातीत, स्व–प्रकाशमान सत्ता – ब्रह्म के रूप में अनुभव करते हैं।

जगत् मिथ्या है

ऐसा नहीं है कि ऐसे ज्ञानी व्यक्ति दुनिया को जानते नहीं है, बल्कि वे इसे मिथ्या जानते है। मिथ्या उसे कहा जाता है कि जिसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। आचार्य हमारे आस–पास की सभी जानने‍योग्य चीजों की वास्तविकता को दिखाने के लिए मृगतृष्णा या दर्पण में प्रतिबिम्ब के उदाहरण देते हैं। यह दिखाई देता है, किन्तु इसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वास्तव में केवल मिथ्या वस्तुएं ही दिखाई देती हैं। मिथ्या में ही द्रष्टा और दृश्य के बीच का अन्तर और द्वैत उभरता है। यदि दुनिया और उसके लोग दिखाई भी

नहीं देते तो शास्त्रों को किसने लिखा होता! अद्वैततत्त्व के अस्तित्व और उसमें जगने के तरीकों को किसने प्रगट किया होता! हालांकि, ये स्थितप्रज्ञ हमारी किसी भी प्राथमिकता और धारणा को साझा नहीं करते हैं। जैसा कि उपर कहा गया है, ये एलियन जैसे मुक्त पुरुष पूरी तरह से एक अलग दायरे में मौजूद हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि श्रीकृष्ण उनके बीच के इस भारी अन्तर को दिन और रात के समान बताते हैं।

दिन और रात

गीता में भगवान बताते हैं, जिसे एक साधारण व्यक्ति नहीं देखता या नहीं कल्पना कर सकता है, उस दायरे में एक स्थितप्रज्ञ जगा हुआ होता है। जिसमें अज्ञानी लोग विद्यमान होते हैं, वह प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए कोई महत्व नहीं रखता। इस प्रकार यह उदाहरण दिया गया है। द्वैत के बीच, कुछ भी हासिल करने का एकमात्र तरीका कर्म है। कोई आश्चर्य नहीं कि वेद और इस प्रकार भगवद् गीता भी हमें कर्म के क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित करती है। हमें हर कर्म को समग्रता से करना सीखना होगा। कर्म करने की एक विशेष कला है जो सफलता और तृप्ति सुनिश्चित करती है और वह

दिन और रात

है यज्ञभाव से किया गया कर्म, जिसमें हमें निश्चित रूपसे उन गुरुओं का मार्गदर्शन लेना चाहिए जिन्होने इसमें उत्कृष्टता प्राप्त की है और जो ज्ञानी हैं। वेद इसीके बारे में है। वेद प्रमाण है, हमारे मार्गदर्शक प्रकाशक और प्रेरणा के स्रोत है। कर्म मुख्य आत्मप्रयास है, हालांकि जब स्थितपज्ञ की बात आती है, तो उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से कर्म को पूरी तरह से त्याग दिया है। उनका दायरा कर्म की पहुंच से परे हैं। इस प्रकार श्री शंकराचार्य एक ज्ञानी और एक सांसारिक व्यक्ति के बीच भारी अन्तर की बात करते हैं। भगवान द्वारा दिन और रात के बारे में दिया गया दृष्टान्त पूरी तरह से प्रासंगिक है।

कर्म और उससे परे

आचार्य आगे बताते हैं कि न केवल ये बुद्धिमान लोग कर्मसंन्यासी हैं, बल्कि इसका यह भी अर्थ है कि अब वेद उसके लिए प्रमाण नहीं रहे। इस विषय में उस श्लोक पर के शांकरभाष्य में अत्यन्त रोचक चर्चा है। वेद एक समय कर्म के लिए महान और प्रेरक होते हैं, उनकी प्राथमिकता न केवल बाह्य उपलब्धियां है, बल्कि आन्तरिक शुद्धि भी है, और फिर वही वेद धीरे धीरे हमें गहन विचार और ध्यान के माध्यम से कर्म से परे आत्मज्ञान के दायरे में ले जाते हैं। तभी जीवन का शाश्वत सत्य हमारे अपने आत्मा और सभी के आत्मा के रूप में अनुभव होता है। तब वे वास्तव में जगे हुए होते है।।

ओम् तत्सत्।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

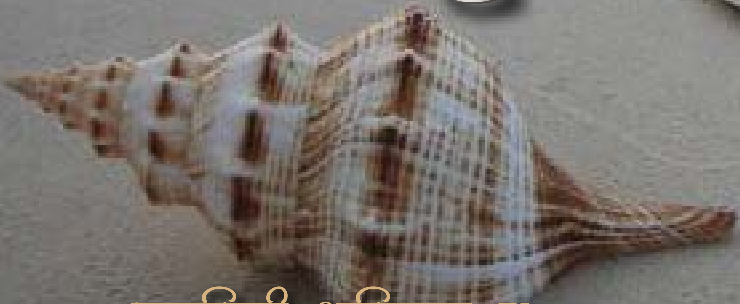

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्व परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक - 23

घटावभासके दीपो
घटादन्यो यथेष्यते।
देहावभासको देही
तथाऽहं बोधविग्रहः।।

जैसे घट को प्राकशित करनेवाला दीपक घट से भिन्न ही होना चाहिए, वैसे ही देह को प्रकाशित करने वाला देही देह से भिन्न है, वह बोध स्वरूप मैं ही हूं।।

वाक्य वृत्ति

पूर्व श्लोकों में आचार्य ने हमें देह आदि हम नहीं है, किन्तु उसके प्रकाशक है – इस तथ्य को दिखाया। मन, इन्द्रियां तथा उसकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का हम न केवल अनुभव करते हैं, किन्तु उसके साक्षी, प्रकाशक की तरह सदैव असंग, अविक्रिय रूप से स्थित हैं।

इसे बताकर आचार्य इसे युक्ति के माध्यम से सिद्ध करके दिखाते हैं। हम अपने शरीर, इन्द्रियां, मन-बुद्धि आदि के प्रकाशक की तरह से विराजमान हैं। तथापि शरीर के धर्म को अपने उपर आरोपित करके जन्मादिवान् मानने लगते हैं। मन-इन्द्रियां आदि के विकारों को हम जानते हैं, उसमें हो रहे परिवर्तन को भी सतत प्रकाशित करते हैं तथापि उन परिवर्तनों को अपने अन्दर ही परिवर्तन मानकर तत्-तत् होकर सुखी-दुःखी होते है, और प्रतिक्रिया करते है। आचार्य यहां हमें एक युक्ति के द्वारा समझा

वाक्यवृत्ति

रहे हैं कि घटावभासके दीपो – जैसे घट को प्रकाशित करनेवाला दीपक अर्थात् उसका जो प्रकाशक है उसके बारे में हम जानते हैं कि यह घडे से दीपक सदैव भिन्न होता है। इसीलिए घडे के होने और उसके अभाव को भी समान रूप से प्रकाशित करता है। यदि उससे भिन्न नहीं होता तो घडे के अभाव के साथ ही उसके प्रकाशक दीपक का अभाव हो जाना चाहिए। किन्तु हम जानते हैं कि ऐसा नहीं होता है।

देहावभासको देही उसी तरह से हम देह को प्रकाशित करनेवाले देही है। देही होने का अभिप्राय जिस प्रकार से गृह में रहनेवाला गृही होता है; वैसे ही हम देह में रहनेवाले देही, देह के प्रकाशक है। गृह में रहनेवाला गृही गृह से पृथक् होता है, वैसे ही हम इस देह में रहनेवाले देही उससे पृथक् है। तथा अहं बोधविग्रहः – देह के प्रकाशक होने के कारण हम चेतन स्वरूप, उससे भिन्न है। इसलिए देह के बाल्यावस्था से लेकर अन्त तक समस्त परिवर्तन, विकारों को प्रकाशित करते है अर्थात्

वाक्यवृत्ति

उसे जानते है। सतत हो रहे परिवर्तन से हममें कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता है। हमारे प्रकाशित करने के सामर्थ्य में भी किसी प्रकार की वृद्धि व क्षय नहीं होता है। सुषुप्ति में देह का भान नहीं होता है, उस समय हमारा अभाव भी नहीं होता है। किन्तु इस अभान की अवस्था को भी हम जानते है। इस प्रकार आचार्य ने यह निष्कर्ष निकालकर दिखाया कि हम देह के प्रकाशक देही, चेतनस्वरूप आत्मा देहादि उपाधियों से सर्वथा भिन्न है।

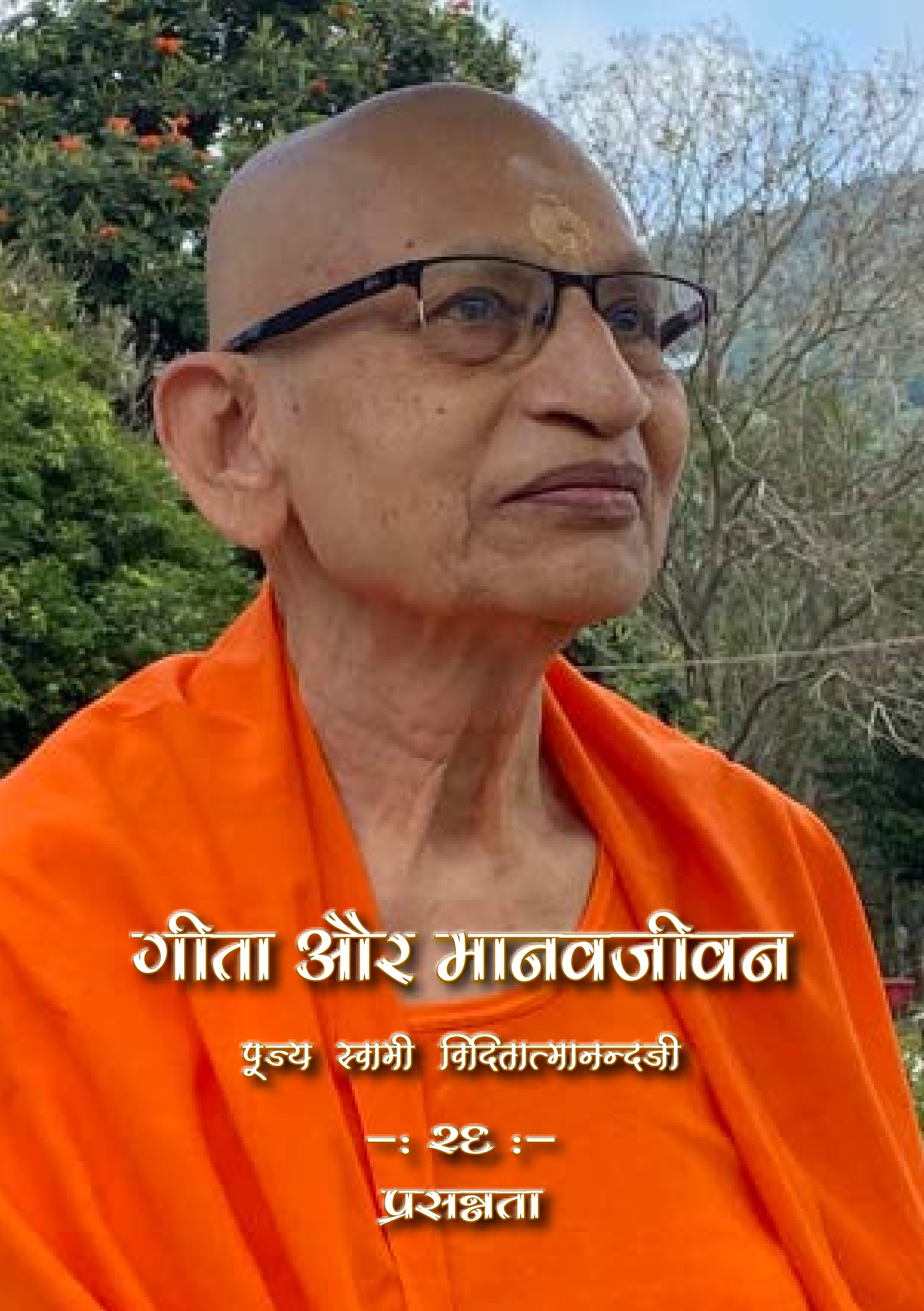

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: २८ :–

प्रसन्नता

गीता और मानवजीवन

शास्त्र बताते हैं कि सुख बाहर नहीं है, सुख मनुष्य का स्वभाव है। मन जब शान्त होता है, तब यह स्वाभाविक सुख का अनुभव होता है। हम धन जमा करने के लिए झूठ का, प्रपंच का या अनैतिकता का आश्रय लें, उसके माध्यम से शायद हम बहुत सारा धन जमा करने में सफल हो जाएं। किन्तु इस धन को जमा करने के पीछे का हेतु क्या था? हम आनन्द से, सुख से रहे। किन्तु हम सुखी कब रह सकते हैं? जब हमारा मन स्वस्थ हो, शान्त हो तब। किन्तु इस सुख-प्राप्ति की प्रक्रिया में जीवन के मूल्यों का बलिदान देकर हम अपने ही मन में संघर्ष पैदा कर लेते है, मन की शान्ति-स्वस्थता ही यदि गंवा देते हैं, मन ही खो बैठते हैं तो जीवन में सुविधा तो सब कुछ मिल जाएगी, किन्तु शान्ति, सुख नहीं मिलेगा।

गीता और मानवजीवन

इसलिए धर्म से, जीवन के मूल्यों के आचरण से ही जो प्राप्त होता है वह है शान्ति, स्वस्थता, प्रसन्नता, सरलतारूप सिद्धि। परन्तु इसे गंवाकर हम लोग बाह्य वस्तु, धनसम्पत्ति, मानप्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, तो भी उसका उपयोग व्यावहारिक रूप से है ही नहीं। धन से हम पुस्तक खरीद सकते है, किन्तु उन पुस्तकों का करना क्या? उसे अलमारी में सजाना मात्र! क्योंकि पढ़ने जितनी मन की स्वस्थता तो हम गंवा बैठे हैं। इस तरह, धन से पुस्तक मिल सकते है, किन्तु ज्ञान नहीं मिल सकता। धर्म के पालन द्वारा ही मन की स्वस्थता और उसके माध्यम से ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इसलिए धर्म ही एकमात्र व्यावहारिक वस्तु है। धर्म का बलिदान अर्थात् स्वयं का ही बलिदान।

इसीलिए भगवान कहते हैं कि नियतं कुरु कर्म त्वम्। धर्म पर आधारित कर्म करना तुम्हारे लिए योग्य है और वही तुम्हारा दायित्व है।

इस प्रकार समर्पण की, यज्ञ की, त्याग की भावना धर्म में आपेक्षित है। नैतिकता या अहिंसा पालन के लिए किसी त्याग की अपेक्षा रहेगी ही। सत्य का पालन करना हो तो असत्य का त्याग करना ही

पडेगा और असत्य से जो कुछ बाह्य लाभ मिलता हो, उसका त्याग करना ही पडेगा। इसलिए, धर्म मनुष्य के पास सतत त्याग की अपेक्षा रखता है। रामायण–महाभारत में हम देखते है कि सत्य के पालन के लिए श्री रामचन्द्रजी या युधिष्ठिर को कितना–कितना भुगतना पडा। श्री रामचन्द्रजी को चौदह वर्ष वन में जाने की क्या आवश्यकता थी? वन में जाने के लिए पिता ने सीधे तो कहा नहीं था, माता ने कहा है। पिताजी ने ऐसाी आज्ञा स्पष्टरूप से की होती तो बात अलग होती। फिर भी उसे पिता के वचन की तरह स्वीकार करके वन में चले गएं। अयोध्या से समस्त लोगों ने आग्रहपूर्वक कहा कि, महाराज! वन में मत जाइएं।’ अर्वाचीन युग में श्री रामचन्द्रजी के स्थान पर कोई और होता तो तुरन्त कहता, ‘राज्य की प्रजा मेरे साथ है, इसलिए मैं ही राजगादी पर बैठुंगा, वन में नहीं जाउंगा।’ किन्तु श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसा नहीं किया, क्योंकि उन्हें वचन का या धर्म का मूल्य है। वे जानते हैं कि धर्मपालन ही हितकारी है। उनके मन में कैसी प्रसन्नता है! तुलसीदासजी वर्णन करते हैं कि राज्याभिषेक होना है, इन बातों से उनके मुख में जरा भी हर्ष का कोई आवेग नहीं आया और वनवास जाने की बात से लेशमात्र भी उनके मुख पर ग्लानि नहीं आई। श्री रामचन्द्रजी के श्रीमुख की प्रसन्नता में कोई भी परिवर्तन नहीं।

धर्म से हम इस प्रकार का बल प्राप्त क र सकते हैं।

जीवन्मुक्त

— ६० —

बदरीनाथ

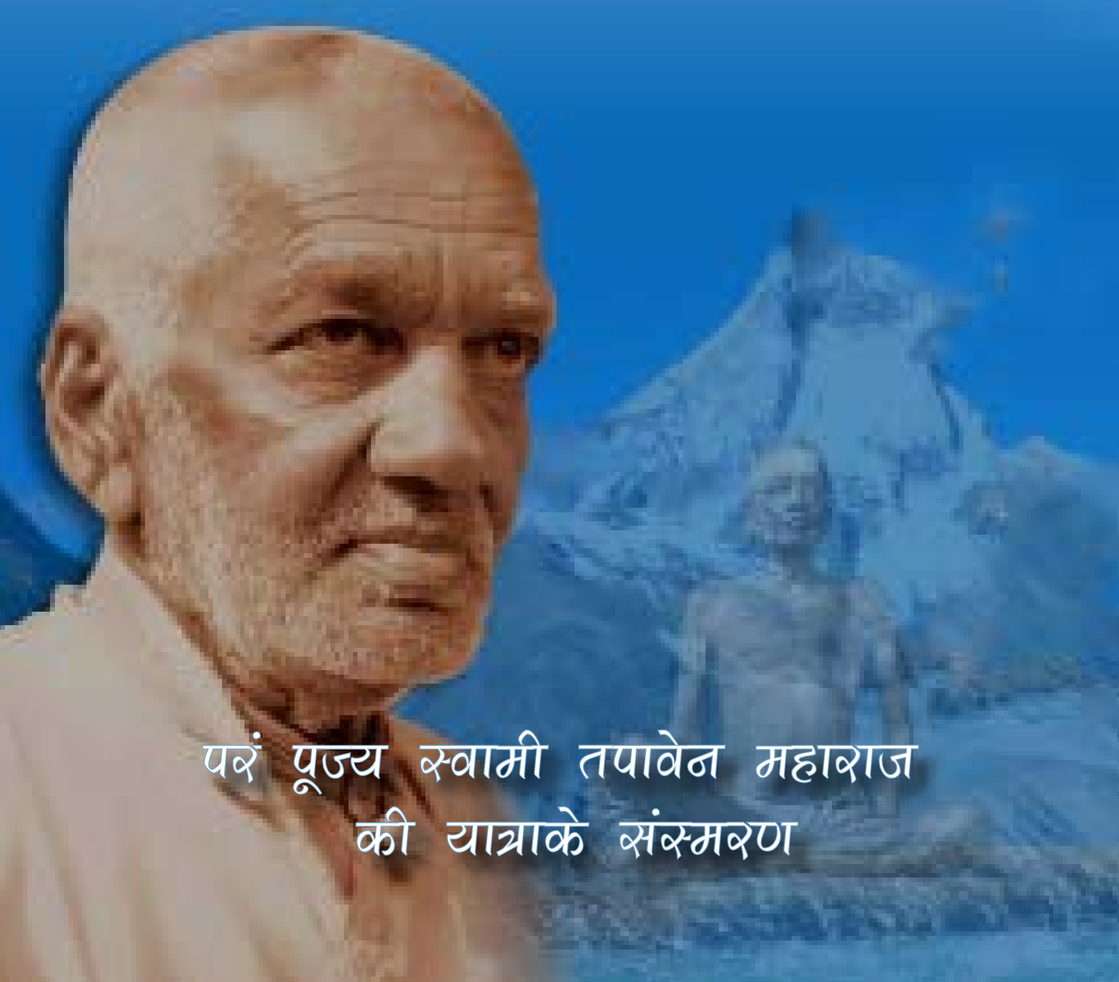

परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवनमुक्त

बदरीनाथ मंदिर से लगभग एक मील उत्तर की ओर 'गौडपाद शिला' नामक एक शिला है। यह शिला बहुत बडी तो नहीं है, पर मनोहर है। यह शिला अलकनंदा के जलप्रवाह में स्थित है। कहा जाता है कि यही शिला शुक के शिष्य गौडपादाचार्य का प्यारा चिन्तन स्थान थी। यह तो प्रसिद्ध है कि व्यास तथा शंकर ने अपने सब मुख्य ग्रंथ बदरिकाश्रम में ही लिखे थे। ऐसे ही यह विश्वास किया जाता है कि गौडपाद ने भी बदरिकाश्रम में इसी शिला पर बैठ चिन्तन करते हुए माण्डूकोपनिषद् के विवरण रूप कारिकाओं की रचना की थी। एक परंपरा प्रसिद्ध बात यह भी है कि श्री शंकर गौडपाद से बदरिकाश्रम में मिले थे। गौडपाद ने उस समय स्वरचित माण्डूक्यकारिकाएं श्री शंकर को दी थी, ताकि वे गौडपाद के विचारों की व्याख्या करते हुए उन पर अपना

भाष्य लिख सकें। भारत माता के ललाट पर कुंकुम तिलक के समान प्रशोभित उस गौडपाद शिला पर मैं कभी कभी शाम को अकेले जाकर बैठता था और उस समय मेरा मन भक्ति तथा गर्व से प्रफुल्लित हो जाता था।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कौशल्या चरित्र

— १२ —

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।

जाहि राम पद गूढ़ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

लोकमंगल और आदर्श की रक्षा के लिए यदि राघवेन्द्र का वनवासी बनना आपेक्षित है तो कौशल्या मां को इसमें रंचमात्र आपत्ति नहीं है। पर भरत की भावनाओं का मूल्य उनकी दृष्टि में इससे कम भी नहीं है। अतः वे दोनों के समन्वय का मार्ग प्रस्तुत करती हैं। जब वे लक्ष्मण को अयोध्या लौटाने का प्रस्ताव करती हैं तब उनका ध्यान इस तथ्य की ओर रहा होगा कि बाल्यावस्था से अब तक लक्ष्मण रामभद्र की सेवा में सर्वदा उनके सन्निकट रहे हैं। यह अवसर अब भरत को मिलना चाहिए। इस तरह उनकी दृष्टि में यह प्रस्ताव कर्तव्य, भावना और न्याय को समेटे हुए था। महाराज श्री जनक ने इस प्रस्ताव के पीछे निहित सद्भाव, स्नेह और वात्सल्य की भूरि-भूरि सराहना की। यद्यपि व्यवहार के पण्डित होने के कारण उन्हें पूरी तरह पता था कि यह

सम्भव न होगा। मां कौशल्या असीम धैर्य धारण किए हुए चित्रकूट से अयोध्या लौट आई।

अदोष दर्शन कौशल्या अम्बा के स्वभाव का एक अंग था। इसका अपवाद केवल एक ही प्रसंग में प्राप्त होता है। कौशल्या अम्बा ने दोष देखा भी तो किसमें? जहां दोष की कल्पना भी दोष मानी जाती है, जो तत्वतः साक्षात् ब्रह्म है और अवतार काल में जिन्हें सारे समाज ने धर्म और मर्यादा के मूर्तिमान विग्रह के रूप में देखा, वे रामभद्र उनकी दृष्टि में दोषी सिद्ध हुए। कभी स्वयं को 'राम मातु' कहकर कौशल्या गौरवान्वित समझती थी। 'राम सरिस सुत मैं महतारी' में इसी भाव की अभिव्यक्ति होती है। किन्तु लक्ष्मण को शक्ति लगने का समाचार सुनते ही उनकी भावना सर्वथा परिवर्तित हो गई। राम का गौरव उनकी दृष्टि में संदिग्ध हो उठा। राघवेन्द्र के चैतन्य रहते लक्ष्मण के प्राणों पर आ बनी, यह ऐसा समाचार था जिस पर विश्वास करने को जी नहीं चाहता था। पर वह तो वे अपने कानों से सुन रही थी। लक्ष्मण के लिए औषधि लेकर आ रहे रामदूत पर अविश्वास भी तो नहीं किया जा सकता था। परदुःखकातर,

आश्रितजनरक्षक, मातृवात्सल्य राघव के गुण कहां लुप्त हो गए? सर्वत्यागी लक्ष्मण का यह बलिदान मां के हृदय को इतना सालता है कि वे मौन न रह सकीं। केवल दो वाक्यों का सन्देश आंजनेय के माध्यम से उन्होंने राघव के पास भेजा। तेरह वर्षों की सुदीर्घ अवधि के पश्चात् अपने लाड़ले का समाचार प्राप्त होने पर वात्सल्यमयी मां की क्या स्थिति हुई होगी उसे शब्दों की सीमा में बांध पाना सम्भव ही नहीं है। राम के वनवासी होने के पश्चात् कौशल्या अम्बा के वात्सल्य के कुछ बड़े ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। उन दिनों बहुधा मां की दृष्टि उस दिशा की ओर लगी रहती थी, जिस दिशा–पथ से राघव वन की ओर पधारे थे। उस दिशा की ओर जाते हुए पथिकों को देखकर उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि कहीं वे चित्रकूट की ओर तो नहीं जा रहे हैं। कभी वे किसी पथिक को आदरपूर्वक बुलावा भेजतीं और उससे कहतीं– 'प्रिय पथिक! यदि वन में मेरे राघव से भेंट हो जाए तो उन तक मेरा यह संदेश पहुंचा देना, कहना राघव! केवल एक बार के लिए ही सही, अयोध्या लौट आवें।

कथा / प्रसंग

सुतीक्षण की दक्षिणा

सुतीक्षण की दक्षिणा

एक समय की बात है, सरल हृदय शिष्य सुतीक्ष्ण ने अपने गुरु ऋषि अगत्स्य से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की, उसके उपरान्त जब समावर्तन का समय आया तो सुतीक्ष्ण ने धर्मपरम्परा अनुरूप गुरु अगत्स्य से गुरुदक्षिणा के लिए अनुरोध किया। किन्तु अगत्स्य मुनि ने कहा कि, 'नहीं पुत्र! तुमने जो सुन्दर तरह से, निष्ठापूर्वक शिक्षा ग्रहण की है, वही मेरे लिए दक्षिणा समान है।' किन्तु सुतीक्ष्ण के अत्यन्त आग्रह करने पर ऋषि अगत्स्य ने कहा कि, 'यदि तुम हमें दक्षिणा देना ही चाहते हो तो हमें श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के दर्शन कराओ, यही तुम्हारी दक्षिणा होगी।' उस दिन से सुतीक्ष्ण श्रीराम की प्रेमपूर्वक उपासना व आराधना करते हुए धैर्यपूर्वक उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगा।

सुतीक्ष्ण की दक्षिणा

जब श्रीराम की वनवास यात्रा में शरभंग मुनि से मुलाकात हुई, उन्होंने श्रीराम को दण्डकवन में स्थित सुतीक्ष्ण के आश्रम में जाने की सलाह दी। जब श्रीराम समेत तीनों वहां पहुंचें, तो उन्होंने सुतीक्ष्ण को एक वृक्ष के नीचे गहरी ध्यानमुद्रा में देखा। अपने समर्पित भक्त को आशीर्वाद देने के लिए श्रीराम ने पहले अपने दिव्य चतुर्भुज रूप में सुतीक्ष्ण के हृदय में प्रवेश किया। इस गहन आध्यात्मिक अनुभूति ने सुतीक्ष्ण को झक्झोर दिया। प्रथम तो उन्हें यह विश्वास ही नहीं हुआ कि, वास्तव में श्रीराम उनके पास आए हैं! वह सोचने लगा कि, ‘हमने ऐसे कौन से व्रत, जप, तप आदि साधन भकितपूर्वक किए हैं? हममें ऐसी कौनसी पात्रता है कि श्रीराम हमें दर्शन देंगे?’ उन्हें अपनी इस अनुभूति पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। किन्तु कुछ ही क्षणों में उन्होंने श्रीराम की भक्तवत्सलता और उदारचरित्र के बारे में सोचा कि यद्यपि हममें पात्रता नहीं है; किन्तु प्रभु की महानता व उदारता को देखकर यह सम्भव है कि मुझ जैसे अपात्र को भी दर्शन दे सकते हैं।

उनकी गहन आध्यात्मिक अनुभूति और

सुतीक्ष्ण की दक्षिणा

इस सोच ने उन्हें आंख खोलने के लिए प्रेरित किया। तब श्रीराम सीता एवं लक्ष्मण समेत वृक्ष की झाड़ी के पीछे से धीमें से समक्ष हुएं। सुतीक्ष्ण उनको भौतिक रूपों में देखकर इतने भावविभोर हो गएं कि वे किं-कर्तव्यविमूढ़ होकर खुशी के मारे नाचने लगें। अपने अन्दर कुछ धैर्य धारण करके प्रभु से निवेदन किया कि, 'हमारे गुरुदेव श्री अगत्स्य मुनि का आश्रम पास में है, वहां चलकर आपका उनसे मिलना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा। वे आपको रहने के लिए आदर्श स्थान सुझाएंगें। अतः हम आपको ऋषि अगत्स्य के आश्रम तक ले जाएंगें। यह दण्डकवन बहुत घना और पार करना कठिन है। हम आपको रास्ता दिखाएंगे और आपको गुरु अगत्स्य तक ले जाएंगे। इससे हमें अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता का ऋण भी चुकाने का अवसर प्राप्त होगा।' श्रीराम ने सुतीक्ष्ण की सहाय की स्नेहपूर्ण पेशकश को सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार ऐसी चुनौतिपूर्ण दक्षिणा को सुतीक्ष्ण ने अपने गुरु के श्रीचरणों में समर्पित करके ऋणमुक्त हुएं।

up

परमात्मा के अस्तित्व
में हमारा अपना
अस्तित्व
ही प्रमाण है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

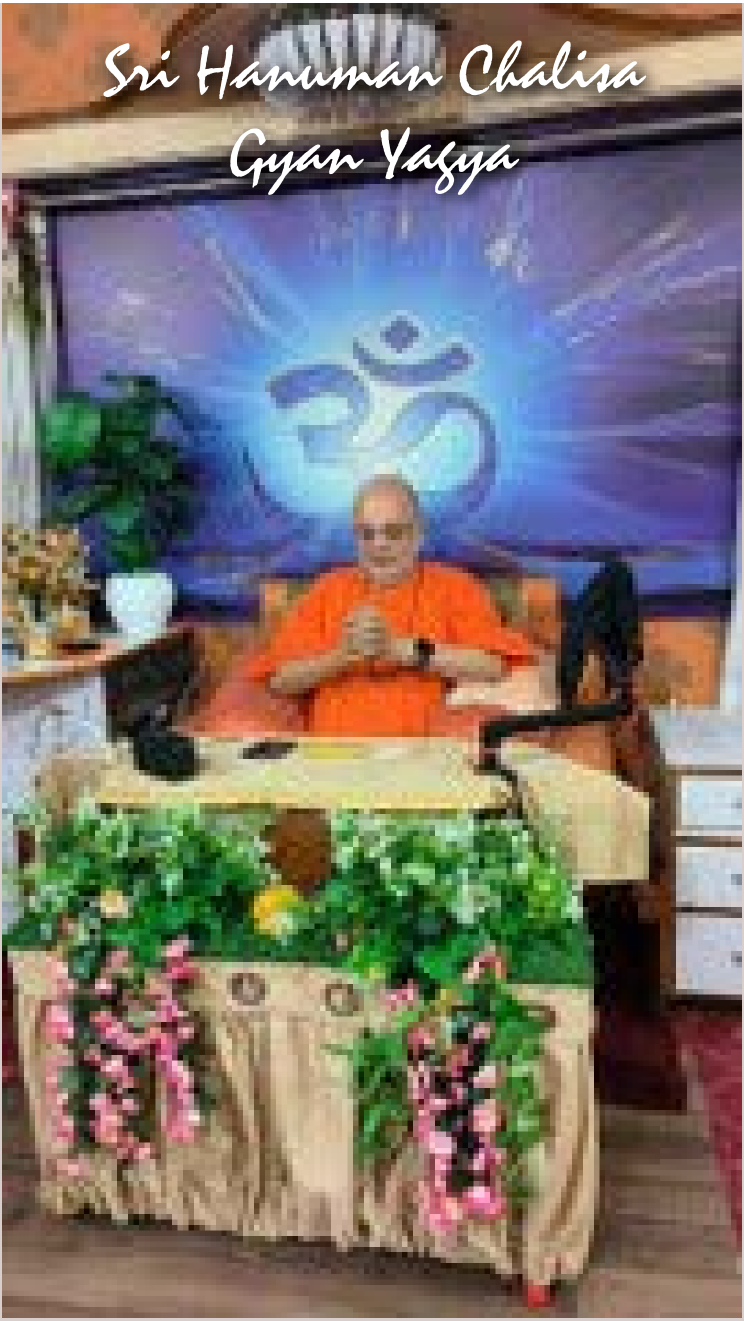

आश्रम / मिशन समाचार

Hanuman Chalisa Gyan Yagya Conclusion

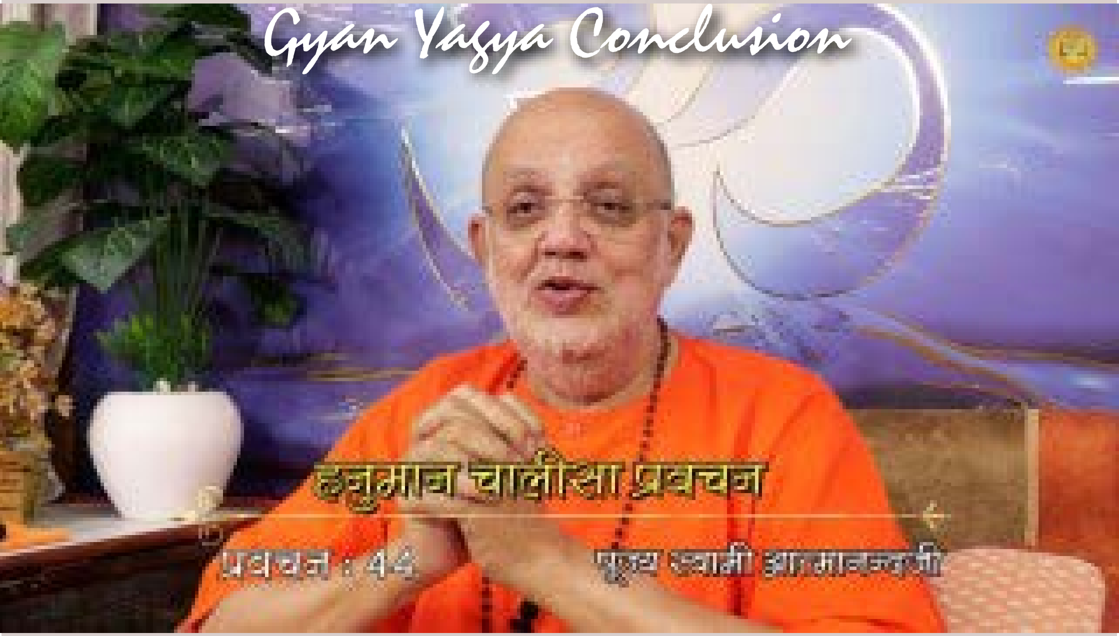

आश्रम / मिशन समाचार

Bhandara on Samapan

आश्रम / मिशन समाचार

Online Vedanta Classes

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Fully involved children

आश्रम / मिशन समाचार

Games & Aarti

आश्रम / मिशन समाचार

Sri Adi Shankaracharya Jayanti

आश्रम / मिशन समाचार

Bhavya Shobha Yatra

From Ashram to Shankaracharya Dwar

आश्रम / मिशन समाचार

Grand Procession

Guruji

Offering Reverence

आश्रम / मिशन समाचार

Pujan of Shankaracharyaji

आश्रम / मिशन समाचार

Paying Reverence

आश्रम / मिशन समाचार

Children dressed for the occasion

आश्रम / मिशन समाचार

Aarti at Ashram

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

आदि शंकराचार्य विरचित तत्त्वबोध

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

Video Pravachans on Internet Archive Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☜ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - June '25

Vedanta Piyush - May '25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore